ISSN - 2231-1130
वर्ष–षष्ठम् ; सितम्बर–2015

महाभारत में चिकित्सा विज्ञान

पूर्णिमा सिंह राना*

पंचमहाभूत द्वारा निर्मित इस मानव देह में जब तक पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश इन पाँचों महाभूतों का अनुपात सन्तुलित रहता है, तब तक मानव शरीर स्वस्थ रहता है तथा जब इनका अनुपात असन्तुलित हो जाता है, तब शरीर में विभिन्न रोग उत्पन्न हो जाते हैं। यह मानव शरीर ही धर्म–अर्थ–काम और मोक्ष की साधना में सहायक है – **शरीरमाद्य खलु धर्म साधनम्।** अतः इस शरीर को स्वस्थ रखना अत्यन्त आवश्यक है। इसी कारण रोग उत्पन्न होनें पर उसका निदान तथा चिकित्सा की जाती है। प्राचीन वैदिक ग्रन्थों में स्वास्थ्य प्राप्ति हेतु विविध उपाय प्राप्त होते हैं। इस सन्दर्भ में आयुर्वेद को चिकित्सा विज्ञान का महान ग्रन्थ माना गया है।

महाभारत विविध शास्त्रों से अनुस्यूत महान् ग्रन्थ है, अतः इसमें महर्षि व्यास ने विविध प्रकार के ज्ञान–विज्ञानों का उल्लेख कथानक के प्रवाह में अनायास ही कर डाला है। इस महाग्रन्थ में शरीर तथा मन दोनों के ही स्वास्थ को समान महत्व दिया गया है।

प्रस्तुत शोध पत्र में महाभारत में प्राप्त आष्टिांगिक चिकित्सा का उल्लेख प्रयोगों तथा उदाहरणों के माध्यम से किया जाएगा। आष्टिांगिक चिकित्सा आयुर्वेद का ही एक अंग है, इसके अन्तर्गत आठ प्रकार की चिकित्साएँ की जाती है, यथा काय चिकित्सा, शलय चिकित्सा, शालाक्य चिकित्सा, भूत चिकित्सा, कौमार–भृत्य चिकित्सा, रसायन चिकित्सा, अंगद चिकित्सा तथा वाजीकरण चिकित्सा। इस शोध पत्र में उपर्युक्त आठ प्रकार की चिकित्साओ का उल्लेख किया जाएगा।

विश्वसाहित्य में सुविख्यात सर्वाधिक विशालकाय ग्रन्थ 'महाभारत' को भारतीय संस्कृति का विश्वकोष कहा जाता है। महर्षि वेदव्यास द्वारा विरचित 'महाभारत' अनेक शास्त्रों से अनुस्यूत विशाल महाकाव्य है, जो

* सहायक अध्यापिका, बेसिक शिक्षा विभाग, बहराइच।

संसार की समस्त घटनाओं को प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप में अपने में समेटे हुए है। अतः महाभारतकार की यह उक्ति ''यदहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित'' सार्थक प्रतीत होती है। महर्षि व्यास ने महाभारत में कथाओं, उपाख्यानों आदि का उल्लेख करते हुए नाना प्रकार के विज्ञानों की चर्चा प्रयोगों, तर्कों तथा उदाहरणों के माध्यम से अनायास ही कर डाली है।

चिकित्सा विज्ञान –

चिकित्सा शब्द – कित् + सन् + अ + टाप के योग से बना है। चिकित्सा का सामान्य अर्थ है इलाज। इसके द्वारा मनुष्य रोगों को दूर कर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करता है। मानव शरीर पंच महाभूतों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश) से निर्मित हुआ है। जब तक ये सभी महाभूत सन्तुलित रहते हैं तब तक शरीर स्वस्थ रहता है तथा जब ये असंतुलित हो जाते हैं तो शरीर में नाना प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं। इन रोगों से शरीर को मुक्त रखने के लिए चिकित्सा की जाती है। अतः मानव जीवन में चिकित्सा विज्ञान का विशेष महत्व है।

प्राचीन वैदिक ऋषियों, विद्वानों, मनीषियों आदि ने चिकित्सा विज्ञान का उल्लेख वैदिक ग्रन्थों में अनेक स्थानो पर किया है। इन सन्दर्भ में ''आयुर्वेद'' में प्राचीन चिकित्सा विज्ञान का उल्लेख मिलता है। इसी प्रकार रामायण काल तथा महाभारतकाल में भी चिकित्सा विज्ञान का उल्लेख अनेक स्थानों पर मिलता है।

महाभारत तथा आष्टाङ्गिक चिकित्सा –

आयुर्वेद के अनुसार, चिकित्सा के प्रमुख रूप से आठ अंग हैं, जिन्हें आष्टाङ्गिक चिकित्सा कहा जाता है। इसके अन्तर्गत चिकित्सा के आठ प्रकार माने गये हैं यथा – काय चिकित्सा, शल्य चिकित्सा, शालाक्य चिकित्सा, भूत चिकित्सा, कौमार भृत्य चिकित्सा, रसायन–चिकित्सा, अङ्गद चिकित्सा, वाजीकरण चिकित्सा।

महाभारत काल में आयुर्वेद के अनुसार आष्टाङ्गिक चिकित्सा का

प्रयोग प्रायः लोक व्यवहार में किया जाता था। इस सन्दर्भ में महाभारत के सभा पर्व में नारद मुनि द्वारा युधिष्ठिर के प्रति प्रश्नोत्तर शैली में यह कथन मिलता है कि ''तुम्हारे वैद्य अष्टाङ्ग चिकित्सा में कुशल, हितैषी, प्रेमी तथा तुम्हारे शरीर को स्वस्थ रखने के प्रयत्न में सदा संलग्न रहने वाले हैं न?''[1] इस कथन से अनुमान लगाया जा सकता है कि महाभारत काल में आठ प्रकार की चिकित्सा प्रचलित थी। नाड़ी, मल, मूत्र, जिह्वा, नेत्र रूप, शब्द तथा स्पर्श ये आठ चिकित्सा के प्रकार कहे जाते हैं।

1. **काया चिकित्सा** – यह दो शब्दों के योग से बना है – काय + चिकित्सा। अर्थात् **कायः सकलं शरीरं तस्य चिकित्सा काय चिकित्सा।** अतः इसके अनुसार सम्पूर्ण शरीरगत रोगों की चिकित्सा को काय चिकित्सा कहते हैं। सुश्रुत संहिता के अनुसार, शरीर के सर्वांग में होने वाले ज्वर, रक्त, पित्त शोष, उन्माद, अपस्मार, कुष्ठ तथा अतिसा आदि रोगों की चिकित्सा का विधान जिसमें किया जाता है, आयुर्वेद के उस अंग को 'काय–चिकित्सा' कहते हैं।[2] काय चिकित्सा शब्द से सम्पूर्ण शरीर अभिप्रेत है। काय शब्द अग्नि के लिए भी आता है।[3] इस अग्नि के ठीक रहने से मनुष्य भी स्वस्थ तथा निरोगी रहता है। अग्नि के शान्त होने पर मनुष्य मृत हो जाता है तथा अग्नि के विकृत होने पर रुग्ण हो जाता है। इसीलिए अग्नि की चिकित्सा को काय (शरीर) की चिकित्सा कहते हैं। शरीर का आधार अग्नि है इसी कारण भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में स्वयं को वैश्वानर अग्नि कहा है।[4]

महाभारत के शान्ति पर्व में राजा कराल जनक तथा महर्षि वशिष्ठ का संवाद मिलता है जिसमें नाना प्रकार के रोगों जैसे – सिरदर्द, नेत्र पीड़ा, दन्त रोग, गले में घेंघा रोग, जलोदर, ज्वर, गुलगण्ड, विषूचिका, अपस्मार आदि का उल्लेख मिलता है।[5] इस सन्दर्भ में महाभारत के अनुशासन पर्व में भी श्री महेश्वर द्वारा जमा देवी के प्रति नाना प्रकार के रोगों की उत्पत्ति के कारणों की विस्तृत चर्चा की गयी है।[6]

महाभारत में यक्ष्मा तथा राजयक्ष्मा नामक रोग का उल्लेख मिलता है। इन दोनों रोगों के सन्दर्भ में प्राचीनकाल से विद्वानों में मतभेद चला आ

रहा है। 'यक्ष्मा' शब्द सामान्यतः रोगवाचक है, यथा – **तत्रव्याधिरामयो गदयक्ष्मा ज्वरो विकारो रोग इत्यनर्थान्तरम्।**[7] इसे सामान्य रूप से क्षय रोग (T.B.) कहा जाता है। 'राजयक्ष्मा' शब्द सम्भवतः एड्स (AIDS) रोग के लिए प्रयोग किया जाता है क्योंकि राजयक्ष्मा के लक्षण तथा प्रभाव, एड्स रोग के लक्षण तथा प्रभाव से मिलते–जुलते हैं। इस सन्दर्भ में महाभारत के उद्योग पर्व में भीष्म द्वारा दुर्योधन के समक्ष विचित्रवीर्य (कुरूवंश के पूर्वज) के विषय में वर्णन किया गया है जिसके अनुसार विचित्रवीर्य अपनी पत्नियों से अधिक आसक्त होने के कारण राजयक्ष्मा नामक रोग के शिकार हो मृत्यु को प्राप्त हो गये थे।[8] इसके अनुसार, विचित्रवीर्य बहुपत्नी वाले थे तथा कई पत्नियों को संतुष्ट करना स्वास्थ्य हेतु उचित नहीं माना जाता है। इसीलिए वे राजयक्ष्मा रोग से ग्रसित हुए। इस सन्दर्भ में महाभारत के शल्य पर्व में चन्द्रमा के राजयक्ष्मा नामक रोग से ग्रसित होने का उल्लेख मिलता है। जिसमें राजयक्ष्मा रोग का कारण चन्द्रमा की अनेक पत्नियों का होना बताया गया है।[9] इस सन्दर्भ में 'भारत के प्राणाचार्य' नामक पुस्तक में विद्वानों की सभा का एक प्रसंग मिलता है, जिसके अनुसार, आयुर्वेदाचार्यों की गोष्ठी में राजयक्ष्मा के सन्दर्भ में मतभेद उत्पन्न होने पर महर्षि आत्रेय द्वारा चन्द्रमा की बहुपत्नी प्रसंग का उल्लेख किया गया है।[10] इस सन्दर्भ में आयुर्वेद का वृहत् इतिहास नामक पुस्तक में राजयक्ष्मा नामक रोग के लक्षण तथा प्रभाव की समानता आधुनिक युग में प्रचलित एड्स नामक रोग से की गयी है।[11]

इस विवरण से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि प्राचीन विद्वानों तथा चिकित्सकों द्वारा राजयक्ष्मा नामक रोग के जो कारण तथा निदान के उपाय बताए गये हैं, उन्हें आधुनिक युग में एड्स नामक रोग के नाम से जाना जाता है। आधुनिक चिकित्सक भी बहु स्त्रियों के कारण समागम करने को इस रोग का कारण मानते हैं तथा निदान के रूप में असुरक्षित यौन सम्बन्ध से बचना ही बताते हैं।

2. शल्य चिकित्सा– यह आयुर्वेद के आष्टांगिक चिकित्सा में से सबसे प्रमुख माना गया है। इसे वर्तमान समय में सर्जरी कहा जाता है। शल्य शब्द

शल् हिंसायाम् अथवा शल–शलनम् हैं, इसे हिंसा अर्थ में लिया जाता है। जिससे शरीर में पीड़ा हो या तंतुओं की हिंसा हो वह शल्य है तथा इस प्रकार की गयी चिकित्सा **शल्य चिकित्सा** कहलाती है। आयुर्वेदाचार्य धन्वन्तरि के अनुसार, इससे शीघ्र चिकित्सा होती है क्योंकि इसमें यंत्र, शस्त्र, क्षार से प्रयोग होने के रोग शीघ्र शान्त हो जाता है। शेष समस्त सात प्रकार की चिकित्साओं को इसकी अपेक्षा रहती है इसलिए यह शाश्वत, पुण्य, आयु के लिए उपकारी, यश का साधन, स्वर्ग देने वाला और जीविका का साधन है।[12]

प्राचीन काल में शल्य चिकित्सा अति विकसित थी। इसके साक्ष्य वैदिक ग्रन्थों, रामायण तथा महाभारत में उदाहरण के रूप में यत्र–तत्र मिल जाते हैं। इस सन्दर्भ में रामायण के सुन्दरकाण्ड में विलाप करती हुई सीता का कथन है कि ''यदि राम समय पर मेरी रक्षा नहीं करेंगे तो रावण मेरे अंगों को वैसे ही काट डालेगा जैसे शल्य चिकित्सक गर्भ स्थित बालक को निकालने के लिए गर्भ को तेज शस्त्रों से काट डालता है।[13] इस कथन में सीता द्वारा शल्य चिकित्सक का उल्लेख किया गया है जिससे तत्कालीन शल्य चिकित्सा का अनुमान लगाया जा सकता है।

महर्षि व्यास ने महाभारत में अनेक स्थानों पर शल्य चिकित्सा का उल्लेख किया है। इस सन्दर्भ में महाभारत के शान्ति पर्व में श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन के प्रति सृष्टि के प्रारम्भ का विस्तृत वर्णन किया गया है जिसके अनुसार इन्द्र के अण्डकोष को अश्विनीकुमारों द्वारा शल्य चिकित्सा क्रिया के माध्यम से भेड़ के अण्डकोष से स्थानान्तरित किया गया।[14] यहां स्पष्ट रूप से शल्य चिकित्सा का उल्लेख किया गया है। महाभारत काल में शल्य चिकित्सक को जर्राह कहा जाता था तथा उसे अतिथि के रूप में विशेष आदर के योग्य माना जाता था। ऐसा उल्लेख महाभारत के उद्योग पर्व में विदुर द्वारा नीतियुक्त उपदेश में किया गया है।[15]

3. शालाक्य चिकित्सा – शालाक्य शब्द का मूलतः सम्बन्ध शलाका से माना गया है। अतः नेत्र, कान, शिरोरोग और मुख सम्बन्धी रोगों में मुख्यतः

शलाका का उपयोग होने के कारण इसे 'शालाक्य चिकित्सा' कहा जाता है।

चक्रपाणि के अनुसार, शालाक्य शब्द की व्युत्पत्ति निम्नलिखित है –

शलाका तस्याः कर्म तत्प्रधानं तंत्र शालाक्यं, शलाकया यत् कर्म क्रियते तच्छालाक्यम्।[16]

महाभारत में शालाक्य चिकित्सा का उल्लेख अनेक स्थानों पर मिलता है। इस सन्दर्भ में महाभारत के विराट पर्व में विशेष प्रकार के सांडों के मूत्र को सुंघाकर वन्ध्या (बांझ) स्त्री को पुत्र प्राप्त कराये जाने का वर्णन सहदेव द्वारा राजा विराट के समक्ष किया गया है।[17] यहाँ महाभारतकार ने नाक द्वारा विशेष गन्ध सुंघाकर चिकित्सा किए जाने का स्पष्ट उल्लेख किया है। इससे प्रतीत होता है कि महाभारतकाल में वन्ध्या स्त्री को नस्य चिकित्सा प्रदान की जाती थी।

4. भूत चिकित्सा – इसे 'मनोचिकित्सा' के नाम से जाना जाता है। चरक संहिता में इसे उन्माद रोग के अन्दर समाविष्ट किया गया है। इसमें देव, असुर, पिशाच, नाग, ग्रह आदि के आदेश से दूषित मन वालों के लिए शान्ति, बलि आदि कर्म किए जाते हैं। आधुनिक समय में इस चिकित्सा का महत्व नहीं है परन्तु जो महत्व आज जीवाणुओं का है, वही महत्व उस काल में 'भूत' का था। भूत–प्रेत, पिशाच राक्षस आदि इन सबकी प्रवृत्ति, इनका व्यवहार आधुनिक जीवाणु विज्ञान शास्त्र के ज्ञान के साथ ठीक–ठीक मिलता है, क्योंकि दोनों (भूत तथा जीवाणु) को रक्त, मांस, वसा से प्रीति रहती है, दोनों ही अंधेरे (रात) को पसन्द करते हैं। अतः ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन वैदिक काल में अणुवीक्ष्य यंत्र तथा आधुनिक रोग विकृति विज्ञान के साधन न होने से प्राचीन विद्वानों ने मनुष्यों से भिन्न इनकी एक नयी श्रेणी बनायी जिसे अमानुषोपसर्ग या भूत विद्या नाम दिया। इस सन्दर्भ में महाभारत के शान्ति पर्व में सूक्ष्म जीवाणुओं अथवा कृमि का उल्लेख भीष्म द्वारा युधिष्ठिर के प्रति किया गया है जिसके अनुसार, जो मूर्ख ब्राह्मण ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद के मंत्रों का विप्लव करता है, वह एक कल्प तक नाना प्राणियों की विष्ठाओं का

कृमि होता है।[18] इस कथन में स्पष्ट रूप से कृमि अर्थात् सूक्ष्म जीव की चर्चा की गयी है। इसी प्रकार महाभारत के शान्ति पर्व में अर्जुन द्वारा राजदण्ड की महत्ता के सन्दर्भ में युधिष्ठिर के प्रति सूक्ष्म जीवों का उदाहरण देते हुए 'भूत' शब्द का प्रयोग किया गया है।[19] इस विवरण से ऐसा प्रतीत होता है कि महाभारतकाल में सूक्ष्म जीवों को भूत के नाम से सम्बोधित किया जाता था तथा तत्कालीन विज्ञान बहुत उन्नत रहा होगा क्योंकि उस समय विद्वान सूक्ष्म जीवों के रूप–आकार, प्रभाव तथा लक्षण से भली भांति परिचित थे।

5. कौमार भृत्य चिकित्सा – आयुर्वेद के अनुसार, प्रसूति तंत्र को ही कौमार भृत्य नाम से जाना जाता है। इसके अन्तर्गत प्रसूति विज्ञान से सम्बन्धित तथ्यों जैसे – सूतिकागार, गर्भावस्था, प्रसव आदि का अध्ययन किया जाता है। इस सन्दर्भ में महाभारत के उद्योग पर्व में अर्जुन के लिए सन्देश भेजते हुए कुन्ती द्वारा श्रीकृष्ण के प्रति कथन मिलता है कि अर्जुन के जन्म के समय जब नारियों से घिरी मैं आश्रम के सूतिकागार में बैठी थी, उसी समय दिव्य आकाशवाणी हुई।[20] यहां सूतिकागार (Operation Thearter) का उल्लेख किया गया है। इसी प्रकार रामायण के उत्तरकाण्ड के इक्तालीसवें अध्याय में **'अरोगप्रसवा नार्यो वपुष्मन्तो हि मानवाः।**[21] ऐसा उल्लेख मिलता है। सुश्रुत संहिता में 'भृत्य' की व्याख्या की गयी है, जिसके अनुसार, कुमारों (बालकों) का धारण–पोषण 'भृति' तथा इससे सम्बन्धित होने के कारण 'कौमार भृत्य' कहलाता है।[22]

6. रसायन चिकित्सा – आयुर्वेद के अनुसार, रस शब्द से शरीर के रस–रक्त–मांस–मेद–अस्थिमज्जा और शुक्र, इन सात धातुओं का ग्रहण होता है। जिस विज्ञान से शरीर की ये सात धातुएं बनी रहें, नवीन रूप में रहे, उसे 'रसायन विज्ञान' कहते हैं।

प्राचीन काली में ऋषियों, मनीषियों तथा विद्वानों को रसायन चिकित्सा का अदभुत ज्ञान था। इस सन्दर्भ में महर्षि च्यवन के पुनः युवावस्था प्राप्त करने की घटना लोक प्रसिद्ध है। इस कथा का उल्लेख महाभारत के

वन पर्व में लोमश द्वारा युधिष्ठिर के प्रति किया गया है जिसके अनुसार, अश्विनी कुमारों द्वारा निर्मित विशेष प्रकार के रसायन से युक्त जल में स्नान करने से वृद्ध च्यवन ऋषि युवा हो गये थे।[23] प्राचीन प्राणाचार्यों पर लिखी पुस्तक 'भारत के प्राणाचार्य के अनुसार, च्यवन ऋषि ने जिस विशेष जल में स्नान किया था उस जल में 'कुटी प्रवेशिक' नामक रसायन मिला हुआ था।[24] अतः इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि महाभारतकाल से भी पूर्व रसायन चिकित्सा अपने चरम शिखर पर पहुंच चुकी थी।

7. अंद चिकित्सा – आयुर्वेद की आष्टांगिक चिकित्सा के अन्तर्गत इसे विषतंत्र भी कहा जाता है। इसके अन्तर्गत सांप, कीट आदि विषैले जन्तुओं के काटने से उत्पन्न हुए विष तथा उसके विकारों के प्रशमन का अध्ययन किया जाता है। इस चिकित्सा का प्रयोग प्राचीन काल से किया जा रहा है।

महर्षि व्यास ने महाभारत के आदि पर्व में इस चिकित्सा का उल्लेख किया है जिसके अनुसार, दुर्योधन के षडयंत्र स्वरूप विषाक्त भोजन के ग्रहण करने से भीम के शरीर में व्याप्त विष का प्रभाव विषधारी सर्पों के काटने से नष्ट हो गया था।[25]

इससे स्पष्ट होता है कि विष को विष नष्ट करता है अर्थात् स्थावर विष को जंगम विष काटता है तथा जंगम विष को स्थावर विष काटता है। इस चिकित्सा का एक लोक प्रसिद्ध उदाहरण यह भी प्राप्त होता है कि समुद्र–मन्थन से निकले हलाहल विष को धारण करने वाले भगवान शिव ने इसके प्रभाव के प्रतिरूप में गले में सर्प, सिर पर चन्द्रमा तथा जटा में गंगा को धारण किया है। जिससे स्पष्ट होता है कि स्थावर विष को जंगम विष विपरीत होने पर परस्पर उदासीन करते हैं।

आधुनिक समय में चिकित्सक भी यह बात मानते हैं कि विष ही विष को काटता है। इसका एक साक्ष्य दैनिक समाचार पत्र 'अमर उजाला' के दिनांक 6 अक्टूबर 2012 के प्रकाशन में 'जहर जो दे जिन्दगी' नामक शीर्षक

में मिलता है जिसके अनुसार सर्प के विष में हानि रहित टॉक्सिन होता है जिससे कैंसर, डायबिटीज और हाई ब्लड प्रेशर जैसी जानलेवा बीमारियों का इलाज किया जा सकता है।[26]

8. वाजीकरण चिकित्सा – वाज का अर्थ है शुक्र या वेग। अतः जिन विज्ञान के द्वारा मनुष्यों के शुक्र की वृद्धि हो वेग की वृद्धि होती है वह वाजीकरण चिकित्सा कहलाता है। इस चिकित्सा का प्रयोग क्लीव तथा अशक्त व्यक्तियों को शक्तिशाली तथा बलवान बनाने हेतु किया जाता है तथा यह चिकित्सा केवल पुरुषों के लिए ही होती है। सुश्रुत संहिता में इस चिकित्सा का स्पष्ट उल्लेख मिलता है।[27] यह चिकित्सा सृष्टि के संचालन में सन्तान उत्पत्ति हेतु अत्यावश्यक है।

महर्षि व्यास ने महाभारत में सांकेतिक रूप से वाजीकरण चिकित्सा का उल्लेख किया है। इस सन्दर्भ में भीष्म द्वारा युधिष्ठिर के समक्ष ब्रह्मचर्य का विस्तृत विवेचन किया गया है जिसके अनुसार, वीर्य वृद्धि तथा वीर्योत्पादन को शान्त करने हेतु कृच्छ्रवत के आचरण के साथ–साथ जल में गोता लगाकर अघमर्षण सूक्त का जप करना चाहिए।[28] इससे यह प्रतीत होता है कि बाजीकरण चिकित्सा का प्रयोग महाभारत काल में भी प्रचलित था।

इस समस्त विवरण से प्रतीत होता है कि महाभारतकालीन चिकित्सा विज्ञान, वैदिक कालीन चिकित्सा पद्धति का अनुसरण करता है तथा महाभारत के रचनाकार महर्षि व्यास एक महान चिकित्सक के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। उन्होंने महाभारत में ऐसे अद्भुत रोगों तथा चिकित्साओं का उल्लेख किया है जिनके विषय में आधुनिक वैज्ञानिक खोज कर रहे हैं, यथा – राजयक्ष्मा रोग (AIDS), पुनर्यौवन प्रदान करने वाला रसायन, विष चिकित्सा आदि। यद्यपि आधुनिक विज्ञान इस क्षेत्र में द्रुतगति से विकासकर रहा है तथा नये–नये मार्ग खोज रहा है। तथापि आज से हजारों वर्ष पूर्व महर्षि व्यास द्वारा चिकित्सा के सन्दर्भ में दिए गए उपर्युक्त तथ्य इस बात का सशक्त प्रमाण प्रतीत होते हैं कि महाभारत काल में चिकित्सा विज्ञान आज की अपेक्षा बहुत उन्नत स्थिति में था।

सन्दर्भ –

1. कच्चिद् वैद्याश्चिकित्सायामष्टांगायां विशारदाः।
सुहृदश्चानुरक्ताश्च शरीरे ते हिताः सदा।
– महा, भा, सभा पर्व 5.91

2. काय चिकित्सा नाम सर्वांग संश्रितानां व्याधीनं ज्वररक्त पित्त
शोषोन्मादापस्मारकुष्ठाातिकारादीनामुपशमानार्थम्।
– सु. सं. सूत्र. स्था. 1.14

3. जाठरः प्राणिनामाग्निः काय इत्याभिधीयते।
यस्तंचिकित्सेत् सदन्ति स वै कायचिकित्सकः।।
– आयु. इति. प्रक. 5 पृ. 60

4. अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रिताः। **– गीता 15.14**

5. द्वन्द्वमेति च निर्द्वन्द्वस्तासु तास्विह योनिषु।
शीर्षरोगेऽक्षिरोगे च दन्तशूले गलग्रहे।।
उत्पद्यन्ते विचित्राणि तान्येषोऽप्यभिमन्यते।।
– महा.भा.शान्ति पर्व 303.5–7

6. ये पुराकामकारेण परवेश्मसु लोलुपाः।
आढया वा दुर्गता वापि दृश्यन्ते व्याधिपीडिताः।।
– महा. भा. अनु. पर्व 145 वाँ अध्याय पृ. 4964–4967

7. चरक संहिता (निदा. स्था) 1.3

8. दारेष्वप्याप्यतिसक्तश्च यक्ष्माणं समपद्यत।
– महा, भा. उद्यो, पर्व 147.25

9. तच्छ्रुत्वा भगवान् क्रुद्धो यक्ष्माणं पृथिवीपते।
ससर्ज रोषात् सोमाय स चोडुपतिताविशत्।
– महा, भा. शल्य. पर्व. 35.61

10. भारत के प्राणाचार्य पृ0 156–157

11. आयुर्वेद का वृहद् इतिहास, अध्यय 2, पृ0 84

12. अष्टास्वापि चायुर्वेदतंत्रेषु एतदेवाधिकमभिमतम्। आशुक्रियाकरणात् यंत्र शस्त्र क्षाराग्निप्रणिघातात्। सर्वतंत्रसामान्याच्च।।

– आयुर्वेद का इतिहास प्रकरण 5 पृ0 59

13. तस्मिन्ननागच्छति लोकनाथे गर्भस्थजन्तोरिव शल्यकृन्तः।
नूनं ममांगान्यचिरादनार्यः शरैः शितैश्छेत्स्यति राक्षसेन्द्रः।।

– वा. रामा. सुन्द. का. 28.6

14. कौशिक निमित्तं चेन्द्रोमुष्कवियोग मेषवृषणत्व चावाप।।

– महा. भा. शान्ति पर्व 342.23

15. चिकित्सकः शल्यकर्तावकीर्णा स्तेन क्रूरो मद्यापोभ्रूणहाच
सेना जीवीश्रुतिविक्रायकश्च भृशं प्रियोऽप्यतिथिर्नोदकार्हः।।

– महा. भा. उद्यो. पर्व 38.4

16. संस्कृत में विज्ञान पृ0 119

17. ऋषभांश्चापि जानामि राजन् पूजितलक्षणान्।
येषां मूत्रमुपाघ्राय अपि वन्ध्या प्रसूयते।।

– महा. भा. विरा. पर्व. 10.14

18. ब्राह्मणो ऋग्यजुः साम्नां मूढः कृत्तवा तु विप्लवम्।
कल्पमेकं कृमिः सोऽथ नाना विष्ठासु जायते।।

– महा. भा. शान्ति पर्व 76.6

19. सूक्ष्मयोनीनि भूतानि तर्क गम्यानि कानिचित।
पक्ष्मणोऽपिनिपातेन येषां स्यात् स्कन्धपर्ययः।।

– महा. भा. शान्ति पर्व 15.25–26

20. अर्जुनं केशव ब्रूयास्त्वयि जाते सम सूतके।

– महा. भा. उद्यो. पर्व 137.1

21. वाल्मीकि रामायण उत्तर काण्ड 41.19

22. कौमाराणां भृतिर्धारणं पोषणं चेतिकुमार भृतिः।
कुमार भृतेरिदं कौमार भृत्यम्।।

– सुश्रुत संहिता (सूत्र.) 1.14

23. अचतू राजपुत्रीं तां पतिस्तव विशत्वपः।
ततोऽम्भश्च्यवनः शीघ्रं रूपार्थी प्रविवेश ह।।
× × ×
तुल्यवेष धराश्चैव मनसः प्रीतिवर्धनाः।।

– महा. भा. वन पव् 123.16–18

24. भारत के प्राणाचार्य पृ. 271

25. अथोद्यानवरे तस्मिंस्तथा क्रीडागताश्च ते।
× × ×
हतं सर्पविषेणैव स्थावरं जंगमेन तु।।

– महा. भा. आदि. पर्व 127.44–57

26. दैनिक समाचर पत्र अमर उजाला, 6 अक्टूबर, 2012 पृ0 14

27. वाजीकरणतंत्र नाम अल्पदुष्टाविशुष्कक्षीणरेतसामांप्यापन
प्रसादोपचपजननिमित्तं प्रहर्ष जननार्थञ्च।

– सुश्रुत संहिता (सूत्र.) 1.19

28. रागोत्पन्नश्चरेत् कृच्छ्रं महार्तिः प्रविशेदयः।
मग्नः स्वप्ने च मनसा त्रिर्जवेदघमर्षणम्।।

– महा. भा. शान्ति पर्व 214.13

सहायक ग्रन्थ सूची

1. आयुर्वेद का इतिहास — अत्रिदेव विद्यालंकार
2. गीता — महर्षि वेद व्यास, अनुवादक पं. रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय 'राम'
3. महाभारत — महर्षि वेदव्यास, अनुवादक–साहित्याचार्य पं0 रामनारायण दत्त शास्त्री पाण्डेय 'राम'

4. भारत के प्राणाचार्य — क्विराज रत्नाकर शास्त्री
5. रामायण — महर्षि वाल्मीकि
6. सुश्रुत संहिता — महर्षि सुश्रुत, टीकाकार–राजवैद्य पं, मुरलीधर शर्मा
7. संस्कृत में विज्ञान — डॉ0 विद्याधर शर्मा गुलेरी
दैनिक समाचार पत्र 'अमर उजाला' — दिनांक 6 अक्टूबर 2012 पृ0 14